8 उपभोग का अर्थ एवं महत्व
[MEANING AND IMPORTANCE OF CONSUMPTION]

अर्थ (Meaning)—मानवीय आवश्यकताएँ अनन्त हैं। इन आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिये मनुष्य को वस्तुओं या सेवाओं का प्रयोग करना पड़ता है। इसी क्रिया को 'उपभोग' कहते हैं। इस प्रकार मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिये वस्तुओं अथवा सेवाओं का प्रत्यक्ष प्रयोग अर्थशास्त्र के अन्तर्गत 'उपभोग' कहलाता है। उदाहरणार्थ, जब हम रोटी खाते हैं अथवा इसका उपभोग करते हैं तो इसका अर्थ हुआ कि हम अपनी भूख को मिटाने के लिये (अर्थात् आवश्यकता की सन्तुष्टि) रोटी खाते हैं (रोटी का प्रत्यक्ष प्रयोग)। इसी प्रकार चाय पीना, सिगरेट पीना, चावल खाना, वस्त्र पहनना, डॉक्टर से इलाज कराना इत्यादि उपभोग के उदाहरण हैं।

सामान्यतया ऐसा कहा जाता है कि हम किसी वस्तु का उपभोग कर उसे नष्ट कर देते हैं। किन्तु अर्थशास्त्र में ऐसा नहीं माना जाता है। विज्ञान ने यह प्रमाणित कर दिया है कि मनुष्य न तो किसी वस्तु का निर्माण कर सकता है और न नष्ट। मनुष्य या तो वस्तु की उपयोगिता में वृद्धि कर सकता है या ह्रास। अतः किसी वस्तु की उपयोगिता को नष्ट करना ही 'उपभोग' है (Consumption is the destruction of utility)। पुनः यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि उपयोगिता नष्ट होने के साथ-साथ मानवीय आवश्यकता की पूर्ति या सन्तुष्टि होनी चाहिये। यदि वस्तु विशेष की उपयोगिता नष्ट होती है और मानवीय आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती तो इसे हम उपभोग नहीं कह सकते। उदाहरणतः—यदि शिक्षक खली से लिखता है, तो यह खली का उपभोग हुआ किन्तु यदि वह खली फेंक देता है तो इसे उपभोग नहीं कहेंगे। हालांकि दोनों परिस्थितियों में खली की उपयोगिता नष्ट हो रही है।

उपभोग की परिभाषा विभिन्न विद्वानों ने दी हैं जो इस प्रकार हैं :

मार्शल के अनुसार, **"उपभोग नकारात्मक उत्पादन है।"**

Consumption may be regarded as negative production. —*Marshall*

पेन्सन के अनुसार, **"आर्थिक दृष्टि से आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिये धन का प्रयोग उपभोग है।"**

Consumption in the economic sense of the term may be defined as the application of wealth to the satisfaction of wants. —*Penson*

एली के अनुसार, **"विस्तृत अर्थ में उपभोग का अर्थ है मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिये आर्थिक वस्तुओं तथा व्यक्तिगत सेवाओं का प्रयोग।"**

"Consumption in the broadest sense means the use of economic goods and personal services in the satisfaction of human wants." —*Ely*

मेयर्स के अनुसार, **"उपभोग का अर्थ है स्वतन्त्र मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिये वस्तुओं एवं सेवाओं का प्रत्यक्ष एवं अन्तिम प्रयोग।"**

"Consumption is the direct and final use of goods or services in satisfying the wants of free human beings." —*Meyers*

Scanned with CamScanner

उपभोग की विशेषताएँ
(CHARACTERISTICS OF CONSUMPTION)

उपरोक्त परिभाषाओं के अध्ययन से उपभोग की निम्नलिखित विशेषताएँ सामने आती हैं :

1. **उपयोगिता का नष्ट होना** (Destruction of Utility)—विज्ञान ने यह प्रमाणित कर दिया है कि मनुष्य न तो किसी पदार्थ (वस्तु) का निर्माण कर सकता है और न विनाश (नष्ट)। अतः किसी वस्तु के प्रयोग से वह वस्तु नष्ट नहीं होती बल्कि उसकी उपयोगिता नष्ट होती है। हाँ, वस्तु का रूप अवश्य बदल जाता है। उदाहरणार्थ, यदि कोई मनुष्य फल खाता है, तो वह उदर में जाकर रक्त एवं माँस के रूप में बदल जाता है। यहाँ पदार्थ (फल) नष्ट नहीं हुआ बल्कि उसका रूप बदल गया और उसकी उपयोगिता का ह्रास हो गया।

2. **मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि** (Satisfaction of Human Wants)—उपभोग से मानवीय आवश्यकताओं की तृप्ति होनी चाहिये। यदि किसी वस्तु के प्रयोग से मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि नहीं हो, तो उसे उपभोग नहीं कहेंगे। उदाहरणत: यदि किसी व्यक्ति की कमीज बन्दर उठाकर ले जाय और उसे फाड़ डाले तो इसे कमीज का उपभोग नहीं कहा जा सकता।

3. **आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष सन्तुष्टि** (Direct Satisfaction of Wants)—किसी वस्तु के उपभोग से मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि प्रत्यक्ष रूप से होनी चाहिये। उदाहरणत:, प्यास लगने पर पानी पीना, भूख लगने पर रोटी खाना, ये आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष सन्तुष्टि के उदाहरण हैं। इसी प्रकार कोयला का प्रयोग खाना बनाने में करना उपभोग है किन्तु कोयला को भट्टी में डालकर मशीन चलाना उपभोग नहीं कहा जायेगा, क्योंकि यहाँ आवश्यकता की सन्तुष्टि करने में कोयला का प्रयोग प्रत्यक्ष रूप में नहीं हो रहा है।

4. **उपयोगिता का ह्रास धीरे-धीरे हो सकता है और शीघ्र भी** (The reduction of utility can be rapid as well as slow)—किसी वस्तु की उपयोगिता का ह्रास धीरे-धीरे हो सकता है; जैसे—पुस्तक का अध्ययन करना, कपड़ा पहनना, स्कूटर का प्रयोग करना, टेलीविजन का प्रयोग करना आदि। इसी प्रकार उपभोग से उपयोगिता का ह्रास शीघ्र हो सकता है; जैसे—भोजन करना, पानी पीना, दवा पीना इत्यादि।

5. **सेवाओं का उपभोग** (Consumption of Services)—उपभोग केवल वस्तुओं का ही नहीं बल्कि सेवाओं का भी होता है; जैसे—शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को पढ़ाया जाना, डॉक्टर द्वारा रोगियों का इलाज करना। यहाँ विद्यार्थी शिक्षक की सेवा का उपभोग करते हैं तथा रोगी डॉक्टर की सेवा का।

उपभोग तथा क्षय में अन्तर
(DIFFERENCE BETWEEN CONSUMPTION AND WASTE)

उपभोग तथा क्षय में अन्तर है। उपभोग के अन्तर्गत किसी वस्तु के प्रयोग से मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि होती है, जबकि क्षय के अन्तर्गत वस्तु व्यर्थ में चली जाती है, अर्थात् उससे मानवीय आवश्यकता की सन्तुष्टि नहीं होती है। क्षय तथा उपभोग को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जाता है: यदि लकड़ी का प्रयोग चूल्हे में खाना बनाने के लिये किया जाता है तो यह उपभोग का उदाहरण है। इसके विपरीत, यदि लकड़ी के ढेर में गलती से आग लग जाय और सारी लकड़ियाँ जलकर राख हो जायँ, तो इसे क्षय कहेंगे। दूसरे शब्दों में, जब किसी वस्तु का प्रयोग किसी मानवीय आवश्यकता की सन्तुष्टि में किसी प्रकार सहायक नहीं होता तब 'क्षय' कहलाता है और सहायक होने पर उपभोग कहलाता है।

Scanned with CamScanner

उपभोग के प्रकार
(KINDS OF CONSUMPTION)

1. **वर्तमान तथा भावी उपभोग** (Present and Future Consumption)—जब दैनिक तथा तत्कालीन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये, वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है, तो उसे वर्तमान उपभोग कहते हैं; जैसे—रोटी, कपड़ा, मकान का उपभोग वर्तमान उपभोग का उदाहरण है।

दूसरी ओर, जब कोई व्यक्ति अपनी आय का कुछ भाग भावी आवश्यकताओं की पूर्तिहेतु बचाकर रखता है, तो इसे भावी उपभोग कहेंगे। इसे स्थगित उपभोग (Postponed consumption) भी कहते हैं।

2. **शीघ्र तथा मन्द उपभोग** (Quick and Slow Consumption)—जब किसी वस्तु का उपभोग करने पर उसकी उपयोगिता शीघ्र नष्ट हो जाती है, तो इसे शीघ्र उपभोग कहते हैं, जैसे—रोटी खाना, चावल खाना, दूध पीना, सिगरेट पीना आदि।

दूसरी ओर, यदि किसी वस्तु के उपभोग करने पर उसकी उपयोगिता धीरे-धीरे नष्ट होती है, तो इसे मन्द उपभोग कहेंगे; जैसे—टेलीविजन, रेडियो, पुस्तक, कलम इत्यादि का उपभोग।

3. **उत्पादक एवं अंतिम उपभोग** (Productive and Final Consumption)—जब किसी वस्तु का प्रयोग किसी दूसरी वस्तु के निर्माण हेतु किया जाता है, तो इसे उत्पादक उपभोग कहेंगे; जैसे—कोयले का कारखाने में ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाना, मशीनों का वस्त्र बनाने में प्रयोग किया जाना, गेहूँ का उपभोग बीज के रूप में किया जाना आदि। इसे अप्रत्यक्ष उपभोग भी कहते हैं।

दूसरी ओर, जब किसी वस्तु का प्रयोग मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि हेतु प्रत्यक्ष रूप में किया जाता है तो इसे अन्तिम उपभोग कहा जाता है; जैसे—रोटी, फल, दूध, अण्डों का प्रयोग प्रत्यक्ष उपभोग है, जैसे—गेहूँ का उपभोग भोजन के रूप में किया जाना।

उपभोग का महत्व
(IMPORTANCE OF CONSUMPTION)

प्राचीन अर्थशास्त्रियों (Classical Economists); जैसे—जे. बी. से (J. B. Say), रिकार्डो (Ricardo), मिल (Mill) आदि ने उपभोग पर कोई ध्यान नहीं दिया था। उन्होंने अपना ध्यान केवल उत्पादन पर ही केन्द्रित रखा था। किन्तु समय में परिवर्तन के साथ-साथ उपभोग पर भी अर्थशास्त्रियों का ध्यान केन्द्रित होने लगा। फिर जेवन्स (Jevons), मार्शल (Marshall), वीजर (Weiser), वालरस (Walras) आदि अर्थशास्त्रियों ने उपभोग के महत्व को समझा और अर्थशास्त्र का अध्ययन उपभोग से प्रारम्भ किया।

वस्तुतः **"उपभोग सभी आर्थिक क्रियाओं का आदि और अन्त है"** (Consumption is the beginning and end of all economic activities)। अर्थात् बिना उपभोग के न तो उत्पादन हो सकता है, न विनिमय और न वितरण। इसके महत्व को अध्ययन की सुविधा से दो भागों में बाँटा गया है :

(I) उपभोग का सैद्धान्तिक महत्व (Theoretical Importance of Consumption),
(II) उपभोग का व्यावहारिक महत्व (Practical Importance of Consumption)।

(I) उपभोग का सैद्धान्तिक महत्व
(THEORETICAL IMPORTANCE OF CONSUMPTION)

1. **उपभोग समस्त आर्थिक क्रियाओं का आदि और अन्त है** (Consumption is the beginning and end of all economic activities)—मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की

Scanned with CamScanner

पूर्ति (सन्तुष्टि) के लिये उपभोग करता है। उपभोग करने की इच्छा से ही आर्थिक क्रियाएँ जन्म लेती हैं और जिसके परिणामस्वरूप वस्तुओं का उत्पादन होता है। इसके बाद उपभोग से ही प्रभावित होकर विनिमय और वितरण की क्रियाएँ उत्पन्न होती हैं और अन्त में उपभोक्ता वस्तु का उपभोग करता है। इस प्रकार, उपभोग जिससे हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, वह धुरी है जिसके चारों तरफ हमारे आर्थिक प्रयास हुआ करते हैं। अतः **"उपभोग समस्त आर्थिक क्रियाओं का आदि और अन्त है।"**

2. **उपभोग ही उत्पादन का आधार है** (Consumption is the base of production)—उपभोग की मात्रा ही राष्ट्रीय उत्पादन को निर्धारित करती है। आर्थिक दृष्टिकोण से कोई भी देश कितना विकसित है, इसका अनुमान वहाँ के नागरिकों के उपभोग-स्तर से लगाया जा सकता है। इतना ही नहीं, दो देशों की आर्थिक प्रगति की तुलना भी उपभोग-स्तर के ही आधार पर की जाती है। आज अमेरिका के लोग अधिक वस्तुओं (विलासिता सहित) का उपभोग करते हैं, इसलिये वहाँ बड़े पैमाने पर उत्पादन भी होता है और इसीलिये वह एक विकसित देश माना जाता है।

3. **विनिमय सम्बन्धी कार्य भी उपभोग पर निर्भर करते हैं** (Exchange-activities also depends on consumption)—उपभोग के ही कारण विनिमय सम्बन्धी कार्य किये जाते हैं। एक व्यक्ति मुद्रा देकर इसीलिये वस्तु क्रय करता है कि वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा। यदि व्यक्ति वस्तु का उपभोग नहीं करे, तो विनिमय का प्रश्न ही नहीं उठता।

4. **वितरण की प्रेरक शक्ति उपभोग ही है** (Consumption is the motivating power of distribution)—उपभोग वितरण के लिये उत्प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करता है। उत्पत्ति के विभिन्न साधन वितरण द्वारा आय प्राप्त करते हैं। वे आय इसलिये प्राप्त करना चाहते हैं कि उन्हें वस्तुओं का उपभोग करना है। यदि वितरण के द्वारा उत्पत्ति के विभिन्न साधनों को पारिश्रमिक नहीं मिले तो वे अपनी आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर सकेंगे और अन्ततः उत्पादन बन्द हो जायेगा।

5. **उपभोग रोजगार का अवसर प्रदान करता है** (Consumption creates the opportunity of employment)—जिस देश में जितना ही अधिक वस्तुओं का उपभोग होगा, उत्पादन का स्तर भी उतना ही ऊँचा उठेगा। उत्पादन में वृद्धि होने से लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। अतः उपभोग रोजगार का अवसर प्रदान करता है।

(II) उपभोग का व्यावहारिक महत्व
(PRACTICAL IMPORTANCE OF CONSUMPTION)

1. **परिवार के लिये उपभोग का महत्व** (Importance of Consumption for Family)—प्रत्येक गृहस्वामी के द्वारा पारिवारिक बजट (Family budget) तैयार किया जाता है, जिसके लिये उपभोग का ज्ञान आवश्यक होता है। गृहस्वामियों की आय सीमित होती है जबकि आवश्यकताएँ अनन्त होती हैं। अतः उनके समक्ष यह समस्या उत्पन्न हो जाती है कि वे किस प्रकार सीमित आय का प्रयोग करें कि असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति (सन्तुष्टि) की जा सके। इस सन्दर्भ में उपभोग के विभिन्न नियमों से उसे काफी मदद मिलती है। **एंजिल का उपभोग का नियम** इस मामले में काफी सहायक सिद्ध होता है। सीमित साधनों से अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करने में **सम-सीमान्त उपयोगिता नियम** (Law of Equi-marginal Utility) से काफी मदद मिलती है।

2. **उत्पादकों को लाभ** (Advantages to Producers)—उत्पादकों के लिये भी उपभोग का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक होता है। किस वस्तु का और कितनी मात्रा में उत्पादन किया

Scanned with CamScanner

जाय, इन बातों की जानकारी एक उत्पादक को उपभोक्ताओं द्वारा किये गये उपभोग से ही होती है। दूसरे शब्दों में, माँग-पूर्वानुमान (Demand Forecasting) का आधार उपभोग ही होता है। माँग का सही अनुमान नहीं होने पर उत्पादक को भारी हानि भी उठानी पड़ सकती है।

3. **एकाधिकारियों को लाभ** (Advantages to Monopolists)—किसी भी एकाधिकारी का मुख्य उद्देश्य अपनी परिस्थिति का अधिकतम लाभ उठाना होता है। हालांकि, वस्तु की पूर्ति पर उसका पूर्ण नियन्त्रण होता है, फिर भी वह मूल्य निर्धारण में पूरी मनमानी नहीं कर सकता है। उन्हें भी उपभोक्ताओं की प्रकृति का अध्ययन करना होता है जिसके लिये उन्हें भी उपभोग की जानकारी रखनी पड़ती है। वे हरेक परिस्थिति में वस्तुओं का अधिक मूल्य वसूल नहीं कर सकते। अधिक मूल्य वे उन्हीं वस्तुओं से वसूल सकते हैं जो उपभोक्ता के लिये अत्यावश्यक होती हैं और जिन पर उपभोक्ता की बचत (Consumer's Surplus) प्राप्त होती है।

4. **श्रमिकों को लाभ** (Advantages to Workers)—श्रमिकों के लिये भी उपभोग का ज्ञान आवश्यक है। उपभोग की मात्रा के ही अनुसार वे मजदूरी की माँग करते हैं। मजदूरी कम है या अधिक इसका निर्धारण श्रमिक उपभोग के आधार पर कर सकते हैं।

5. **सरकार को लाभ** (Advantages to Government)—उपभोग से सरकार को अनेक लाभ हैं; जैसे—उपभोक्ताओं की कर-दान क्षमता की जानकारी, देश की आर्थिक प्रगति की जानकारी आदि। इसके अलावा हानिकारक वस्तुओं पर अधिक कर लगाकर उनका उपभोग समाज में रोका जा सकता है।

एन्जिल का उपभोग नियम
(ENGEL'S LAW OF CONSUMPTION)

डॉ. अर्नेस्ट एन्जिल जर्मन अर्थशास्त्री थे। 1857 ई. में उन्होंने सैक्सोनी प्रदेश के विभिन्न वर्गों के पारिवारिक बजटों का अध्ययन किया और महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले, जिसे **'एन्जिल का उपभोग नियम'** (Engel's Law of Consumption) कहते हैं। इस नियम की मुख्य बातें इस प्रकार हैं :

1. किसी भी परिवार की आय जैसे-जैसे बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे भोजन पर व्यय का प्रतिशत घटता जाता है।
2. आय की प्रत्येक अवस्था में वस्त्र, आवास, जलावन, प्रकाश आदि पर व्यय स्थिर रहता है।
3. किसी भी परिवार की आय जैसे-जैसे बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और मनोरंजन पर उसका व्यय बढ़ता जाता है।

Scanned with CamScanner